शालोम। हमारे प्रभु यीशु मसीह का नाम धन्य हो।
आज हम पवित्रशास्त्र का अध्ययन करें और परमेश्वर के दृष्टिकोण से कलीसिया की एकता का परीक्षण करें।
परमेश्वर का वचन हमारे पांव के लिए दीपक और हमारे मार्ग के लिए ज्योति है (भजन संहिता 119:105)।
जब उसका वचन हमारे भीतर भरपूर वास करता है, तो हमारा जीवन प्रकाशित होता है — हमें पता चलता है कि हम कहाँ से आए हैं, कहाँ हैं, और कहाँ जा रहे हैं। उसके वचन की ज्योति हमारे भूत और वर्तमान दोनों को उजागर करती है और हमारे भविष्य का मार्गदर्शन करती है।

आज बहुत से विश्वासियों को संप्रदायों का एकजुट होना एक सकारात्मक बात लगता है।
आख़िरकार, बाइबल में एकता का आदेश दिया गया है:

यूहन्ना 17:11 (ERV-HI): “हे पवित्र पिता, तू उन्हें अपने उस
नाम में सुरक्षित रख जिसे तूने मुझे दिया है, ताकि वे एक हों, जैसे हम एक हैं।”
यूहन्ना 17:21 (NIV): “कि वे सब एक हों, जैसे तू, पिता, मुझ
में है और मैं तुझ में हूँ; ताकि वे भी हम में एक हों, जिससे संसार विश्वास करे कि तूने मुझे भेजा है।”
इफिसियों 4:3,13 (ERV-HI): “शान्ति के बन्धन में आत्मा की एकता बनाए रखने का हर प्रयास करो… जब तक हम सब विश्वास और

परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एकता तक न पहुँचें।”

ये वचन स्पष्ट रूप से आत्मिक एकता पर बल देते हैं।
लेकिन हमें यह पूछना चाहिए: तो फिर संप्रदायिक एकता क्यों परमेश्वर की योजना नहीं है?

संप्रदायिक एकता की समस्या

इस उदाहरण पर विचार करें:

दो जोड़े, जो पहले परमेश्वर के सामने विवाह में बंधे थे, अलग होकर तलाक ले लेते हैं। फिर वे पुनः विवाह करते हैं और नए परिवार बनाते हैं। वर्षों बाद, वे संयोगवश फिर मिलते हैं और अब व्यावहारिक या आर्थिक कारणों से सहयोग करने लगते हैं।

यह एक ऐसी एकता है जिसमें न तो वाचा है और न ही प्रेम। परमेश्वर की दृष्टि में, यह व्यभिचार है:

लूका 16:18 (ERV-HI): “जो कोई अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी
से ब्याह करता है, वह व्यभिचार करता है; और जो किसी त्यागी
हुई से ब्याह करता है, वह भी व्यभिचार करता है।”

चाहे ये लोग कितने भी सहयोगी या भले दिखें, उनकी एकता पवित्र नहीं है।
उसी प्रकार, संप्रदायिक संघ सामाजिक, आर्थिक, या परोपकारी दृष्टि से उपयोगी लग सकता है, पर यदि वे सिद्धान्त और व्यवहार में विभाजित हैं, तो परमेश्वर की दृष्टि में यह आत्मिक व्यभिचार है।
ऐसी एकता बाहरी रूप से आकर्षक दिख सकती है, परन्तु वास्तव में यह शैतानी एकता है।

बाइबिलीय आधार: सच्ची एकता

प्रारम्भिक कलीसिया ने सच्ची परमेश्वर की एकता का उदाहरण प्रस्तुत किया:

प्रेरितों के काम 2:44: “और जितने विश्वास करते थे वे सब एक साथ रहते थे और सब कुछ साझा करते थे।”
1 कुरिन्थियों 12:12-13: “जैसे देह एक है पर उसके बहुत से अंग हैं… वैसे ही मसीह भी है। क्योंकि हम सब एक आत्मा में
एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिये गये…”

वहाँ कोई संप्रदाय नहीं था।
सभी विश्वासियों में एक ही आत्मा, एक ही विश्वास, और एक ही उद्देश्य था।
विश्वासियों को जोड़ने वाला आत्मा परमेश्वर का है — न कि कोई संगठन, परम्परा या मानवीय व्यवस्था।

संप्रदाय: पात्र हैं, एकता नहीं

कल्पना कीजिए कि किसी ने आपको कहा कि 50 माप चावल एक थैले में भर दो, पर आप उसे दर्जनों छोटे पात्रों में बाँट देते हैं।
जब आप उन्हें फिर एक साथ मिलाते हैं, तो वे वास्तव में एक नहीं होते — पात्र अलग-अलग ही रहते हैं।

इसी तरह, संप्रदाय मसीह की देह को बाँट देते हैं।
हर एक दावा करता है कि उसके पास सत्य है, पर कोई भी पूर्ण नहीं। परमेश्वर इस कृत्रिम विभाजन को अस्वीकार करता है:

प्रकाशितवाक्य 18:4: “हे मेरे लोगो, तुम उस में से निकल आओ ताकि उसके पापों में भागी न लो।”

परमेश्वर हमें मसीह में एकता के लिए बुलाता है, न कि संप्रदायिक पहचान के लिए।

धार्मिक परिणाम

संप्रदायों का मिलन मसीह-विरोधी (Antichrist) के मार्ग को तैयार करता है।
शास्त्र चेतावनी देता है कि मसीह का विरोध करनेवाली आत्मा धार्मिक स्वरूप में आती है।
यीशु मसीह के प्रथम विरोधी—फरीसी और सदूकी—धार्मिक नेता थे जिन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था का दुरुपयोग किया।
वे आपस में विभाजित थे, फिर भी मसीह का विरोध करने के लिए एकजुट हो गए:

यूहन्ना 16:2: “वे तुम्हें सभाओं से निकाल देंगे; और जो कोई तुम्हें मारेगा, वह समझेगा कि वह परमेश्वर की सेवा कर रहा
है।”
मत्ती 22:34: “जब फरीसियों ने सुना कि उसने सदूकियों को चुप करा दिया है, तो वे एकत्र हुए।”

इसी प्रकार, संप्रदायिक संघ भी सच्चे मसीहीयों के विरोध में खड़ा हो सकता है, जिससे मसीह-विरोधी का शासन स्थापित होने की भूमि तैयार होती है — जहाँ वह आर्थिक और धार्मिक नियंत्रण करेगा, अर्थात् “पशु का चिह्न” (प्रकाशितवाक्य 13:16-17)।

विश्वास संप्रदाय से बड़ा है

हमें स्वयं से पूछना चाहिए:

क्या हम परमेश्वर के वचन के अधीन हैं या किसी संप्रदाय के अधीन?

क्या हम अपने विश्वास पर गर्व करते हैं या अपने चर्च पर?

क्या हम वास्तव में मसीह को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं? (यूहन्ना 17:3)

क्या हम प्रार्थना, वचन अध्ययन, और सुसमाचार प्रचार करते हैं — बिना किसी के कहे?

संप्रदायिक घमण्ड बहुतों की आत्मिक दृष्टि को अन्धा कर देता है।

□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□,
□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□
□□□□ □□□□ □□, □□□□ □□□□□□□ □□□, □□ □□□□-□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□
□□ □□□□ □□□

□□□□□□□□

□□□□□□□□□□ □□ □□□, □□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□,
□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□
□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□, □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□
□□ □□□ □□□
□□□□□ □□□□□□□□-□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□, □ □□ □□□□□□□□□□
—
□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□

□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp